अन्य प्रकाशित ग्रन्थ

- हनुमच्चरित का क्रमिक विकास (शोधग्रंथ)
- मुण्डन दाह अशौच निर्णय
- व्यास पीठ की आचार संहिता
- वेद-पुराण शास्त्र परिचय
- रामायण के कतिपय समाधान
- एकादशी व्रत निर्णय एवं महात्म्य
- भक्ष्याभक्ष्य निर्णय
- नारी का धर्म एवं स्वरूप विमर्श
- षोडश संस्कार
- लील्यो ताहि मधुर फल जानू
- वैदिक गो महत्व मीमांसा
- ब्राह्मण परिचय तथा ब्राह्मण गोत्र मीमांसा
- पूजा पाठ मीमांसा
- संक्षिप्त तर्पण विधि:

प्रकाशनार्थ

- भक्तिमती भीलनी
- सदाचार निर्णय
- प्रायश्चित निर्णय
- वेदों में मूर्ति पूजा

Scanned by CamScanner

।। श्री हरिः ।।

मृत्यु के संकेत

(मृत्यु के लक्षण)

लेखक :

आचार्य डॉ. रामाधार उपाध्याय

विद्यावाचस्पति एम.ए. (पी.एच.डी., संस्कृत)

प्रकाशक :

पं. रामकृपालु शर्मा (वेदाचार्य)

17, रामायणम्, श्रीराम कुंज, श्रीराम कॉलोनी

होशंगाबाद रोड, भोपाल (मध्यप्रदेश)

मोबा. : 09826787902

Scanned by CamScanner

प्राक्कथन

श्री परमात्मने-रामाय नमः

वर्तमान विज्ञान को तथ्य निर्णयार्थ उपकरणों की आवश्यकता है, किन्तु ऋषियों का विज्ञान वस्तुनिष्ठ वह प्रकृति निष्ठ था। आज भी उस विज्ञान से हम होने वाली भविष्य की गतिविधियों का प्रकृति के संकेतों से सुनिश्चित अनुमान लगा सकते हैं।

मृत्यु तो अवश्यंभावी है प्रत्येक व्यक्ति को जिज्ञासा रहती है कि मेरी मृत्यु कब होगी है। व्यासजी ने पुराणों में उन सभी संकेतों को प्रतिपादित किया है। श्री स्कन्द महापुराण श्री लिङ्ग महापुराण में श्री भाद्दागवातदि पुराणों में वर्णन आया है।

Scanned by CamScanner

सुधीजनों को अपनी मृत्यु की संभाल के लिये पूर्व लक्षणों से अवगत होना आवश्यक है। अतः यह संकलन का प्रयास है। आशा है कि परलोक निष्ठजन इससे लाभ लेगें।

–आचार्य डॉ. रामाधार उपाध्याय

Scanned by CamScanner

मृत्यु के संकेत

(1) लिंग महापुराण में सूतजी कह रहे हैं कि यदि कोई अरुन्धतीया ध्रुव को नहीं देखता है, चन्द्रमा की छाया या आकाश मार्ग नहीं देखता तो एक वर्ष से अधिक जीवित नहीं रहेगा।

(2) यदि सूर्य में किरण दिखाई नहीं देती या अग्नि में किरणों का दिखना नहीं तो ग्यारह माह से अधिक जीवन नहीं है।

(3) जो वमन या मलमूत्र को सोने की तरह चमकीला देखता है तो दश माह से अधिक जीवित नहीं रहेगा।

(4) जो सुनहरे रंग के वृक्ष देखता है, भूतों तथा प्रेतात्माओं को देखता है तो मात्र एक माह जीवित रहेगा।

Scanned by CamScanner

(5) जो सहसा अधिक पतला या अधिक मोटा हो जावे या जिसकी प्रकृति बदल जाती है क्रोधी विनम्र हो जावे, विनम्र जन क्रोधी हो जावे तो मात्र आठ माह जीवित रहेगा।

(6) जिसके धूल या कीचड़ में पैर के चिन्ह खण्डित दिखाई देते हैं, वह सात मास तक जीवित रहेगा।

(7) जिसके शिर पर कौआ, कबूतर, गीध, बैठने लगे वह 6 मास से अधिक जीवित नहीं रहेगा।

(8) जो अपनी छाया को विकृत रूप में देखता है वह चार या पांच मास जीवित रहेगा।

Scanned by CamScanner

(9) जो बिना मेघ के आकाश में दक्षिण दिशा में बिजली चमकना देखता है, और जल में इन्द्र धनुष देखता है वह एक मास तक जीवित रहता है।

(10) जो दर्पण में स्वयं को बिना शिर का देखता है वह एक मास से अधिक जीवित नहीं रहेगा।

(11) यदि किसी के शरीर से शव या चर्वी की तरह गंध आती हो तो उसकी मृत्यु समीप ही है। वह 15 दिन में समाप्त होगा।

(12) स्नान करने के पश्चात् जिसका शरीर सूख जावे या जिसके सिर से धुंआ प्रकट हो वह दश दिन से अधिक जीवित नहीं रहेगा।

Scanned by CamScanner

(13) जिसके शरीर के मर्म स्थानों को वायु का झोंका भेद देता है, पानी के छींटा मारने पर जो प्रसन्न नहीं होता उसकी मृत्यु निकट है।

(14) यदि कोई भालू या बन्दर से जुते रथ पर सवारी करता है दक्षिण दिशा की ओर जाता है तो समझो मृत्यु निकट है।

(15) यदि स्वप्न में काले रंग की स्त्री गाते हुये या काले कपड़े पहिने हुये किसी को दक्षिण की ओर ले जावे तो शीघ्र मृत्यु है।

(16) जो स्वप्न में अपने कंठ को कटा हुआ देखता है या

Scanned by CamScanner

नग्न बौद्ध भिक्षु को देखता है उसे अपनी मृत्यु निकट समझना चाहिए।

(17) स्वप्न में अपने सिर को कीचड़ के सागर में डूबा देखता है उसके जीवन का अन्त हो जाता है।

(18) यदि कोई व्यक्ति जलते अंगारे, बालों को, सूखी नदी को और सर्पों को स्वप्न में देखता है वह दस दिन से अधिक जीवित नहीं रहेगा।

(19) जो स्वप्न में काले विकट व्यक्तियों द्वारा हाथ उठाकर पत्थरों से मारा जाता हुआ अपने को देखता है वह अपने जीवन को तुरन्त त्याग देगा।

Scanned by CamScanner

(20) यदि प्रातःकाल किसी व्यक्ति पर सियार हुआ हुआ करे तो उसके जीवन के दिन गिनती के होते हैं।

(21) यदि स्नान के पश्चात् हृदय में तीव्र वेदना हो और दांतों में सनसनाहट हो तो मृत्यु निकट है।

(22) यदि कोई व्यक्ति दिन-रात्रि में डरता रहे तो और दीपक की तेल घी की गंध न आवे तो मृत्यु निकट ही है।

(23) रात्रि में इन्द्र धनुष दिखाई दे तथा दिन में नक्षत्र मण्डल दिखे तो जीवन समाप्त ही है।

(24) यदि एक आंख से पानी आता हो, स्वप्न में अपने दोनों कान अपने स्थान से खिसके हुये लगे और नाक झुक जावे तो शीघ्र ही मृत्यु है।

Scanned by CamScanner

(25) जो व्यक्ति खुले केश (बिखरे हुये) दक्षिण दिशा की ओर गाते हुये हँसते और नाचते हुये स्वप्न देखे। समय समाप्त हो चुका है।

(26) जीभ काली और खुरदरी हो जाय मुख लाल लाल हो जावे गाल फूले से दिखें तो मृत्यु सन्निकट है।

(27) शरीर का रंग श्वेत हो जावे मेघ की तरह तो समझें कि मृत्यु बहुत निकट है।

(28) यदि कोई स्वप्न में ऊंट-खच्चर-गधा के रथ में बैठा दक्षिण की ओर जा रहा है तो उसका जीवन समाप्त है।

(29) अचानक कानों में सुनाई न पड़ना, आंखों में दिखाई न

Scanned by CamScanner

देना गिर पड़ना, उठ नहीं पाना, द्वार बन्द दिखाई देना ये स्वप्न में दिखें मृत्यु बहुत निकट है।

(30) आँखे ऊपर की ओर पलट जावें, स्थिर न रहें, लाल हो जायें गोल-गोल नेत्र घूमने लगे, मुंह सूखने लगे, नाभि में छिद्र हो जावे, मूत्र अत्यन्त गर्म निकले तो ऐसा व्यक्ति निकट ही मृत्यु को समझे।

(31) कोई व्यक्ति दिन या रात्रि में समझे कि कोई मुझे मार रहा है और मारने वाला दिखाई नहीं देता समझे की आयु पूरी हो चुकी है।

(32) यदि कोई स्वप्न में स्वयं को अग्नि में प्रवेश करते हुये देखते है तो जीवन समाप्त है।

Scanned by CamScanner

(33) यदि कोई स्वप्न में श्वेत वस्तु को काला या लाल देख रहा है तो उसकी मृत्यु निकट है।

(लिङ्ग महापुराण अध्याय 91/1-36)

यदि ऐसे लक्षण दिखाई दें तो व्यक्ति को चाहिए कि गंगाजल-भगवान् का चरणोदक लेना आरंभ करें। गोदान-अन्नदान-स्वर्णदान आदि तुरन्त कर दें मरण की पूर्ण तैयारी करना आरंभ करें। भगवन्नाम संकीर्तन-गीता-भागवत-रामायण श्रवण तथा वाचन। सभी ओर से आसक्ति समाप्त कर दे। नारायण परायण होने के सभी यत्न करें।

जन्म लाभः परं पुंसामन्ते नारायण स्मृतिः।। (....2 स्कंध)

काशी, वृन्दावन, अयोध्या गंगातट-नर्मदातट पर ले जाने का प्रयत्न करना चाहिये।

Scanned by CamScanner

स्कन्दपुराणान्तर्गत मृत्यु चिन्ह

पुनश्च स्कन्द पु. में मृत्यु चिन्हों का वर्णन है-

- दिन रात जिसके दाहिने नासा रन्ध्र से श्वांस निकलती रहे यह निश्चित है कि वह 3 वर्ष के अन्तर्गत मृत्यु को प्राप्त होगा।
- जिसके दाहिने नासा रंध्र से 2-3 दिन रात श्वांस चलती रहे वह मात्र एकवर्ष जीवित रहेगा।
- जिसके दोनों नासापुटों से दस दिन रात तक नि:श्वास त्याग हो, उसका जीवन मात्र तीन दिन बचा है।

Scanned by CamScanner

मृत्यु के संकेत

• जिसकी श्वास वायु नाक से न चलकर मुख से चले वह दो दिन में मार्ग में मृत होगा।

• जब सूर्य सप्तम राशि पर तथा चन्द्रमा जन्म नक्षत्र में स्थित हो तभी श्वांस दाहिनी नाक से निकलती है। ऐसे अवसर पर जिसे काला या पीला वर्ण की पुरुषाकृति सी दिखने लगे वह 2 वर्ष तक ही जीवित रहेगा।

• जो आकाश में घूमती हुई मरकत रंग वाली गजों की पंक्ति सी देखता है, वह 6 मास में मृत होता है।

• जो मुख में जल लेकर सूर्य की ओर पीठ करके मुंह से जल की फुहार छोड़ता है उस फुहार में यदि उसे इन्द्र धनुष रंग की आकृतियाँ नहीं दिखती वह मात्र 6 मास ही जीवित रहेगा।

Scanned by CamScanner

मृत्यु के संकेत

- जो व्यक्ति अरुन्धती, ध्रुव, विष्णुपद तथा मातृ मण्डल नहीं देख पाता उसकी मृत्यु निकट है। जिह्वा को अरुन्धती तथा नासिका के अग्रभाग को ध्रुव कहते हैं। दोनों भौंहों को विष्णुपद तथा नेत्रद्वय के मध्य भाग को मातृ मण्डल कहते हैं। जो इनको नहीं देख पाता उसकी मृत्यु अत्यन्त निकट है।
- जिसको कड़वा, तीखा, खट्टा-नमकीन इसका पूर्ण स्वाद न मिलता हो वह 6 मास में मृत्यु को प्राप्त होता है।
- जिनके कण्ठ-ओठ-जिह्वा-दांत तथा तालु सतत शुष्क हो जाते हैं वह 6 मास में यमालय की यात्रा करेगा।
- जिसका शुक्र, हाथों की उंगली तथा नेत्र के कोने नीले नीले हो वह 6 मास का अतिथि है।

Scanned by CamScanner

मृत्यु के संकेत

- मैथुन काल में जिसको हिचकी आती हो वह पांच मास तक ही जीवित रहेगा।
- नीले वर्ण के गिरगिट की तरह कोई मस्तक पर चढ़ता हुआ सा दिखाई दे तो वह 6 मास में मृत होता है।
- स्नान के पश्चात् जिसकी (छाती) वक्ष, दोनों हाथ तथा दोनों पैर शुष्क हो जावे वह 3 मास तक जीवित रहता है।
- धूल या कीचड़ में जिसके पैरों की आकृति खण्डित दिखाई देती हो वह पांच मास से अधिक नहीं रहेगा।
- जिसका देह स्थिर हो और छाया चंचल (चलती-हिलती) सी दिखाई देवे वह चार मास में चला जावेगा।
- जिसे स्वच्छ दर्पण में अपना शरीर दिखे किन्तु मस्तक

Scanned by CamScanner

दिखाई नहीं देता हो वह एक मास में मृत होगा।

- बुद्धि भ्रंश हो, बोलने में अटपटा वाक्य निकले, दृष्टि उठाते ही इन्द्रधनुष परिलक्षित हो शीघ्र मृत्यु का संकेत है।
- जिसको रात्रि में दो चंद्र दिन में दो सूर्य रात्रि में आकाश में नक्षत्र नहीं दिखें वह शीघ्र ही प्रस्थान करेगा।
- जिसे चारों दिशाओं में इन्द्रधनुष पर्वत शिखर पर गंधर्व नगर तथा दिन में पिशाओं का सा नृत्य दिखाई देता हो तो मृत्यु अति शीघ्र होगी।
- दोनों उंगलियों से दोनों कानों को बन्द करके कोई शब्द सुनाई नहीं दे तो 1 मास की आयु शेष है।
- मोटा व्यक्ति अचानक दुर्बल तथा दुर्बल अचानक स्थूल

Scanned by CamScanner

(मोटा) दिखाई दे तो भी एक मास में मृत्यु होती है।

• जिसको स्वप्न में काक, असुर, भयानक, भूत-प्रेत-कुत्ता, गधा, सियार, ऊंट, वानर, बाज, खच्चर, बगुला पर बैठा हुआ देखे तो एक वर्ष में ही यमलोक प्रस्थान करेगा।

• जो अपने शरीर को गुलाब पुष्पों तथा गन्ध धूप-दीप से भूषित देखता है वह आठ मास तक रहेगा।

• स्वप्न में धूल पर, दीमक की बांबी पर, अपने को चढ़ता हुआ देखे उसका जीवन 6 मास से अधिक नहीं चलेगा।

• जो स्वप्न में तेल मर्दन किया हुआ गधा पर बैठा हुआ, मुण्डन किया हुआ देखता है तथा अपने पूर्व पुरुषों को देखता है, अपने देह पर तृण तथा काठ रखा हुआ देखता है वह 6

Scanned by CamScanner

मास से अधिक जीवित नहीं रहता।

- जिसके समक्ष काला पुरुष, काला वस्त्र पहिने हुये लोहे का दाड लिये अपनी ओर आता दिखाई देता है, उसकी तीन मास आयु शेष है।

- स्वप्न में काली स्त्री का आलिंगन करता देखता है वह एक मास में चला जायेगा।

- स्वप्न में वानर के ऊपर बैठकर पूर्व दिशा की ओर जाता हुआ दिखता है स्वयं को, वह पांच दिन से अधिक नहीं रहता है।

- यदि अति कृपण व्यक्ति दानी हो जावे, दानी कृपण हो जावे स्वभाव परिवर्तित दिखाई देवे तो उसकी मृत्यु शीघ्र ही होती

Scanned by CamScanner

है। (स्कन्द पु. काशी एवं खं. 42 अध्याय)

ऐसे व्यक्ति को इन लक्षणों को देखकर शीघ्र ही काशी का आश्रय ले लेना चाहिए।

एतानि काल चिन्हानि सन्त्यन्यानि बहून्यपि।
ज्ञात्वाऽभ्यसेन्नरो योगमथवा काशिकां श्रयेत्।।

(स्कं. काशी. 42/40)

मृत्यु लक्षणों की बात का वृद्धावस्था ही प्रस्थान का संकेत कर देती है जब तक व्यक्ति काशी नहीं पहुँच जाता तभी तक उस व्यक्ति पर यमराज की दृष्टि रहती है। काशीवास-गंगाजल पान शिवलिंग का स्पर्श करने वाला ही इन कष्टों से बचता है। भगवान् शंकर जिसके कान में स्वयं मंत्र दे रहे हैं उस जीव पर काल का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

Scanned by CamScanner

तावद् गर्जन्ति पापानि तावद् गर्जेद्यमोनृपः।
यावद् विश्वेश शरणं नरो न निरतो व्रजेत्।।42/42
करिष्येत्कुपितः कालः किंकाशीवासिनीं नृणाम्।
काले शिवः स्वयं कर्णे यत्र मंत्रोपदेशकः।।42/44

जो काशीवास कर रहा है उसका कलि-काल-वृद्धावस्था-पापकर्म, रोग क्या हानि करेगा।
अर्थात् कुछ नहीं कर सकता।

कः कलिः कोऽथवा कालः का जरा किञ्च दुष्कृतम्।
का रजः केऽन्तराया वा श्रिता वाराणसी यदि।।42/55

अतः मरणधर्मा व्यक्ति के पुत्रों-शिष्यों परिवारजनों को चाहिये कि मरणासन्न व्यक्ति के लक्षणों को देखकर उसकी मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करें।

Scanned by CamScanner

गीता उपदेश

जैसे मनुष्य अपने पुराने वस्त्रों को उतारकर दूसरे नए वस्त्र धारण करता है, वैसे ही जीव मृत्यु के बाद अपने पुराने शरीर को त्यागकर नया शरीर प्राप्त करता है।

Scanned by CamScanner

कृष्ण वाणी

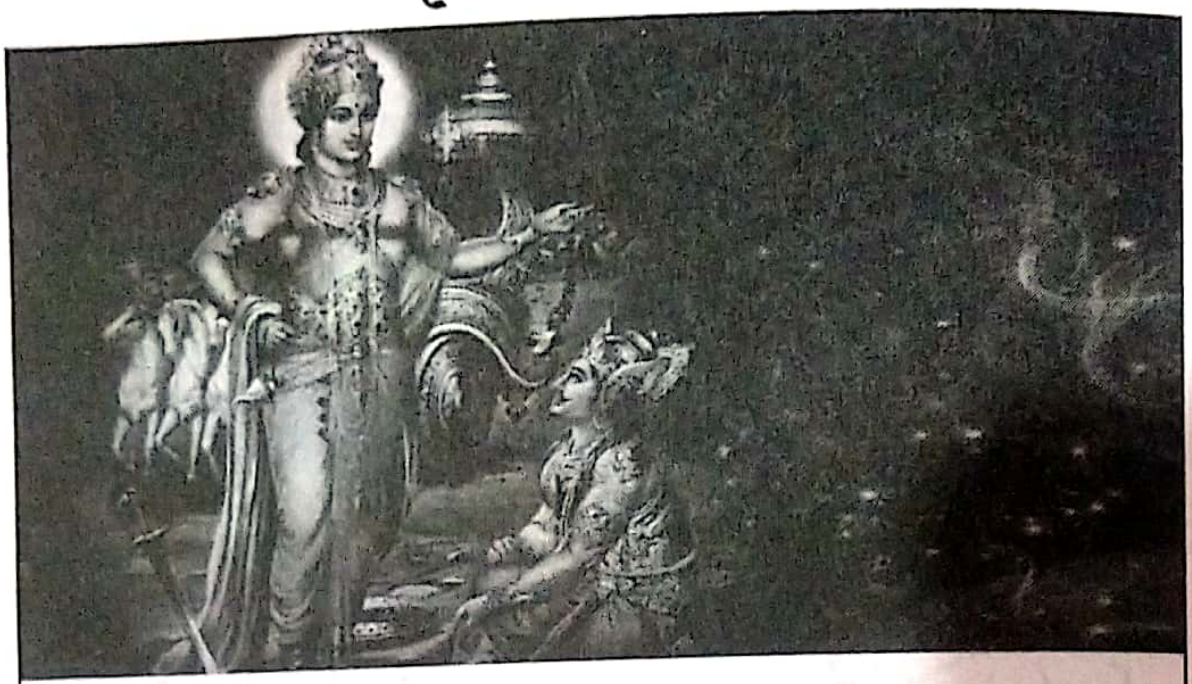

वह जो मृत्यु के समय मुझे स्मरण करते हुए अपना शरीर त्यागता है, वह मेरे धाम को प्राप्त होता है। इसमें कोई शंशय नहीं है।

Scanned by CamScanner